संस्कृत

नाटक शिक्षण विधयः

उद्देश्यम् – संस्कारशिक्षणम्
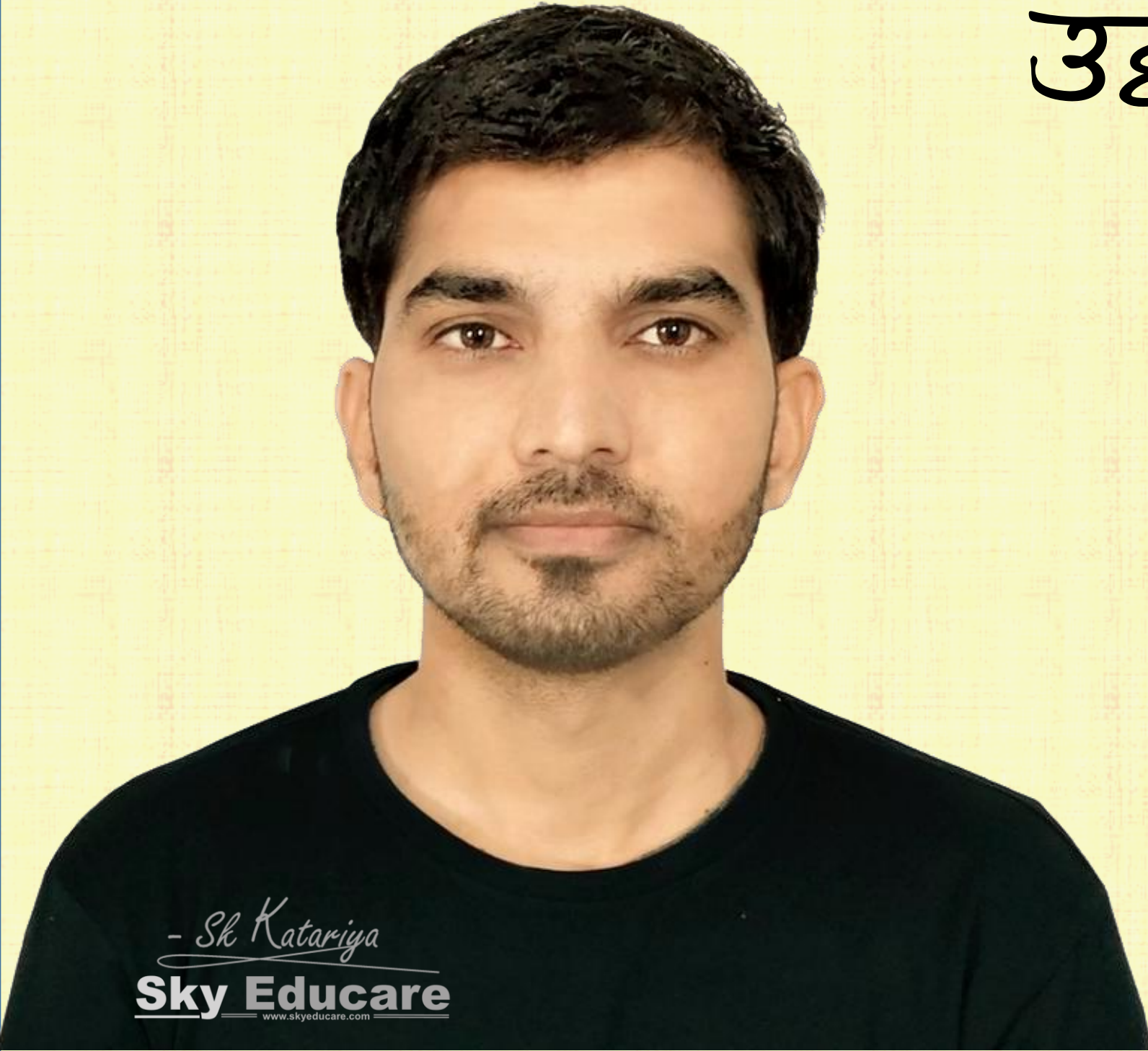
नाटक शिक्षण
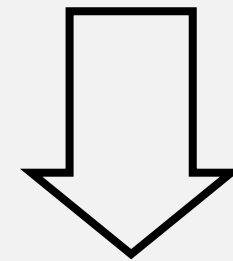
नाटक :

दृश्य श्रव्य काव्य को नाटक कहते हैं, नाटक, काव्य का एक रूप है, जो श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति के साथ साथ संस्कृति तथा संस्कारों का भी ज्ञान कराता है। नाटक में श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती है ।

नाटक शिक्षण

उद्देश्यम् – संस्कार शिक्षणम्

- नाटक में पात्रों द्वारा संस्कृति शिक्षण तथा संस्कार शिक्षण करवाना ।
- अवरोह - आरोह पूर्वक वार्तालाप तथा अभिनय की क्षमता प्रदान करना ।
- छात्रों में निरीक्षण कल्पना, चिंतन एवं विवेचन की योग्यता का विकास।
- मनोरंजन करना ।

नाटक शिक्षण

- **भरतमुनि के अनुसार नाटक शिक्षण के तीन उद्देश्य हैं -**
    - **हितोपदेशजननम्-** समाज को कल्याणकारी उपदेश देना ।
    - **विश्रांतिजननम्-** समाज को शांति प्रदान करना और
    - **विनोदजननम्-** सभी का मनोरंजन करना ।

नाटक शिक्षण की विधियाँ

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

नाटकशिक्षणविधयः

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

इस विधि में नाटक में आए सारे पात्रों का अभिनय स्वयं शिक्षक ही करता है।

पात्रों के अनुकूल व भावानुसार आरोह-अवरोह के साथ संवाद बोलकर अभिनय करता है।

अमनोवैज्ञानिक विधि है क्योंकि नाटक शिक्षण के उद्देश्य पुरे नहीं हो पाते।

इस विधि में छात्र मूक दृष्टा की तरह रहते हैं।

व्याकरणात्मक तत्वों का ज्ञान भी नहीं हो पाता।

नाटकशिक्षणविधय:

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

- इस विधि में अध्यापक नाटक के कथावस्तु ,चरित्र, गुण-शैली आदि की व्याख्या करता है।
- यह विधि गद्य शिक्षण की भांति हो जाती है उच्च स्तर हेतु उपयोगी है
- यह मनोवैज्ञानिक विधि नहीं है क्योंकि छात्र निष्क्रिय रहते हैं।

नाटकशिक्षणविधयः

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

- इस विधि में छात्रों द्वारा पूरे नाटक का अभिनय रंग मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।
- यह विधि नाटक शिक्षण के लिए पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है।
- इससे छात्रों में संस्कार शिक्षण होता है जो कि नाटक का मुख्य उद्देश्य है।
- नाटक शिक्षण की सर्वोत्तम विधि हो पाती लेकिन धन समय की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है।
- सभी विद्यालयों में एवं संस्थाओं में इसके लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती हैं।

नाटकशिक्षणविधयः

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

शिक्षक के द्वारा छात्रों को नाटक के पात्रों की भूमिका का वितरण करके अभिनय करवाया जाता है।

छात्र अभिनय करते हैं शिक्षक निर्देशक होता है।

मनोवैज्ञानिक विधि है।

नाटकशिक्षणविधय:

- आदर्श नाट्य विधि
- व्याख्या विधि
- रंगमंच अभिनय विधि
- कक्षा अभिनय विधि
- समवाय विधि

उक्त सभी विधियों का मिश्रण करके अध्यापक द्वारा नाटक शिक्षण करवाना समवाय विधि है इसे नाटक शिक्षण की ***श्रेष्ठ विधि*** कहा जा सकता है।

नाटक पाठ योजना :

1. प्रस्तावना
2. उद्देश्य कथन
3. वाचन
   - I. आदर्श वाचन,
   - II. अनुकरण वाचन
4. बोध प्रश्न
5. काठिन्यनिवारण
6. विषयवस्तु संबंधी प्रश्न
7. अभिनय (प्रमुख सोपान)
   - I. आदर्शअभिनय (अध्यापक द्वारा)
   - II. भूमिका वितरण (छात्रों को रुचि अनुसार का वितरण)
   - III. अनुकरण अभिनय
   - IV. (छात्रों के द्वारा)
8. मूल्यांकन
9. गृह कार्य